अध्याय द्वितीय
मातृ–देवी के विभिन्न प्रारूप

भारतीय कला में एक देवी का अंकन मिलता है जिसे निर्लज्ज नारी, नग्न पाल्थी मारे बैठी देवी, मातृदेवी आदि पच्चीसों विभिन्न नामों से जाना जाता है जिनमें प्रमुख हैं अदिति, मातृदेवी, रेणुका, नग्नॅकबन्ध। 1956 में स्टेला क्रामरिच ने एक लेख प्रकाशित किया। लेख के अनुसार आलमपुर संग्रहालय में इस देवी की एक मूर्ति रखी है जो सातवीं शताब्दी ईस्वी की है। क्रामरिच ने इस मूर्ति की आकृति की तुलना ऋग्वेद में वर्णित अदिति से की है। 1881 में जान फेथफुल फ्लीट ने मातृदेवी के नाम से उल्लेख किया। ई0डब्ल्यू0 वेस्ट ने लिखा है कि एल्लामा या पेल्लाम्मा केनरीज कर्नाटक कन्नड़ देश की बड़ी लोकप्रिय देवी है। यही वह देवी है जिसे मराठा लोग रेणुका देवी कहते हैं। अभिलेखीय साक्ष्यों से स्पष्ट है कि मातृदेवी की प्रतिमा अल्पतम मानवीय रूपों से पूर्ण मानवीय देवियों के रूप में विकसित हुई है। चारो स्पष्ट रूप निम्नलिखित हैं–

प्रारूप–1 उत्तानपाद पात्र, प्रारूप–2 भुजाविहीन कमलवत सिर, प्रारूप–3 भुजायुक्त कमलवत सिर, प्रारूप–4 मानवरूपकीय।

प्रारूप–1 में मानव के पैर ऊपरी भाग का आकार पात्र और नारी धड़ के शीर्ष पर कमल का फूल स्थित है। चित्र में नारी का धड़ का ऊपरी भाग नहीं है और इसमें नारी के स्तन, भुजाएँ और सिर नहीं हैं। प्रारूप–1 का यह पात्ररूपी धड़ इस तरह से बनाया गया है, मानो यह अपना मुख ऊपर किये हुए है, जिसमें कमल का फूल है, यह एक गुलदस्ते का बाहरी किनारे की तरह है जो भारतीय कला में पूर्णकुम्भ कहा जाता है। इस प्रकार के प्रत्येक उदाहरण में पात्र का ऊपरी भाग कमल का पुष्प लिए हुए है। यह प्रतिमा

अपने में उत्तानपाद के दोनों अर्थों को समाहित करती है। जिसका पहला अर्थ है–प्रसव के समय फैले हुए पैर और दूसरा–उत्तान (ऊपर की तरफ घूमा हुआ छिद्र) जैसे कि कोई एक बर्तन हो, सम्भवतः पात्र गर्भाशय के दुहरे शाब्दिक अर्थ हो वह प्रेरणा देते हैं जो प्रथम प्रारूप के मातृदेवी की आकृति में दृष्टगत होता है।

प्रारूप–2 की प्रतिमा प्रारूप–1 की प्रतिमा के उत्तानपाद जैसा ही है, प्रारूप–2 की प्रतिमा में अन्तर केवल इतना ही है कि धड़ में कन्धे और स्तन जुड़ गये हैं (चित्र 18) इस तरह की प्रतिमा में भुजाएँ या सिर नहीं हैं, परन्तु कमल पुष्प कन्धे के ऊपर बैठाया गया है।

प्रारूप–3 के चित्रों में नारी धड़ में स्तन और दो ऊपर की ओर उठी हुई भुजाएँ हैं, ऊपर की ओर उठी हुई दोनों भुजाओं में कमल की कली है और पैर उत्तानपाद स्थित में है, सभी चित्र कमलवत सिर वाले हैं। (चित्र 48)

प्रारूप–4 के चित्रों में मातृदेवी सम्पूर्णतः मानवीय रूपक हो गई है और इसमें पूर्ण प्राकृतिक नारी धड़ के साथ एक मानवीय सिर भी है। जिसमें भुजाएँ ऊपर की ओर उठी हुई हैं और प्रत्येक हाथ में कमल की कली धारण किए हुए है जैसा कि प्रारूप–3 में है, और पैर भी उत्तानपाद के रूप में है (चित्र 67)।

भारतीय कला इतिहासविदों के संज्ञान में यह बात स्पष्ट है कि अधिकतर मातृदेवी की मूर्तियाँ प्रमुख क्षेत्रीय कालावधि को परिलक्षित करती है। प्राचीन शिलालेख अध्ययन से ऐसी एक मूर्ति जो नागार्जुन–कोण्डा से प्राप्त हुई है, (प्रारूप–3) जो तीसरी शताब्दी ईस्वी की है, (चित्र 42) कर्नाटक के गुलवर्गा जिले के आलन्दगुणजोति नामक स्थान से एक मूर्ति प्राप्त हुई है जिसका विवरण धेरे ने दिया है और इसे उत्तरवर्ती पाश्चात्य चालुक्य के समय का बताया है उसने इसे एक शिलालेख से सम्बद्ध करते हुए सन् 1082 ई0 का बताया है।

चारो प्रारूपों के क्षेत्रीय और क्रमिक अध्ययनों के अनुसार उत्तानपाद पात्र प्रारूप–1 की देवी का रूप दक्षिण में प्रचलित मिलता है। यह तीसरी और चौथी शताब्दी ईसवी में बनायी जाती थी।

कमलवत शीर्ष लिए भुजा विहीन प्रारूप–2 की देवी चौथी से लेकर नवीं शताब्दी तक बनाया गया है परन्तु अपवाद स्वरूप इसके दो उदाहरण दूसरी शताब्दी के भी पाये गये हैं। महाराष्ट्रीयन प्रकार की प्रतिमाएँ जो केन्द्रीय क्षेत्र में नागपुर के अगल–बगल की हैं, प्रारूप–2 की हैं।

कमलवत शीर्ष लिए भुजायुक्त प्रारूप–3 की देवी की प्रतिमाएँ चौथी से दसवीं शताब्दी तक बनायी गई थीं। प्रारूप–3 की मूर्तियाँ मध्य प्रदेश और गुजरात में चौथी शताब्दी में बनायी गई थीं और प्रारम्भिक चालुक्यों के काल में प्रत्येक बारीकी पर विशेष रूप से ध्यान देते हुए आन्ध्र तथा कर्नाटक में सातवीं शताब्दी के अन्त तक बनाई गयी हैं। दक्षिण में इनकी रचना नौवीं शताब्दी के अन्त तक चलती रही। दूसरी से पाँचवीं शताब्दी तक प्राप्त मातृदेवी की मूर्तियों की दुगुनी संख्या छठीं से दसवीं शताब्दी के बीच निर्मित हुई जो इस बात का संकेत करती है कि मातृदेवी की लोकप्रियता और महत्व में सामान्यतः वृद्धि हुई।

मानवरूपकीय प्रारूप–4 की देवी की मूर्ति मथुरा में प्राप्त हुई जिसकी तिथि दूसरी शताब्दी की है (चित्र–66–68) परन्तु इस प्रकार की मूर्ति का उत्पादन गुजरात में सबसे अधिक छठी से सातवीं शताब्दी में हुआ प्रारूप–4 में मानवीय सिरयुक्त मातृदेवी की मूर्ति दक्षिण में कभी नहीं बनाई गयी यह केवल उत्तर भारत में प्राप्त है। प्रारूप–1 केवल प्राचीन और दक्षिणी है। प्रारूप–4 सबसे बाद का है और उत्तर भारत में प्राप्य है। प्रारूप–2 और

प्रारूप–3 न तो विशिष्ट रूप से उत्तरी न दक्षिणी है और चौथी से दसवी शताब्दी के बीच बनाई गई है।

मातृदेवी प्रतिमा के अभी तक ज्ञात उदाहरण 124 हैं, इनमें 62 उत्तरी और 62 दक्षिणी हैं। 62 उत्तरीय उदाहरणों में 48 पाषाण मूर्ति और 14 टेराकोटा पकी हुई मिट्टी की मूर्ति है 62 दक्षिणी मूर्तियों में 51 पाषाण और 112 पकी हुई मिट्टी की मूर्तियाँ हैं। ये उदाहरण इस अवधारणा का खण्डन करते हैं कि मातृदेवी की मूर्तियाँ अधिकतर दक्षिण में बनी हैं और पकी हुई मिट्टी की ज्ञात पाषाण मूर्तियों से यह स्पष्ट होता है कि ये पांव ग्राम्य कला द्वारा उत्पादित नहीं थी वरन इन्हें लोकप्रिय राजवंशों द्वारा राजकीय संरक्षण भी प्राप्त था।

प्रारूप–1 उत्तानपाद–पात्र

सर्वाधिक आधारभूत और प्रतीकात्मक महत्व वाली मातृदेवी का उदाहरण उत्तानपाद पात्र देवी प्रारूप–1 है (चित्र–1–17 व 73)। उत्तानपाद आकृति उन आकृतियों के लिए प्रयुक्त है जिनका अर्थ पीठ पर पड़ा रहना है न कि बैठना या पाल्थी मारकर बैठना है। ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में भारत में नग्न उत्तानपाद देवियों की मूर्तियाँ मिलने लगती है यद्यपि वर्तमान ज्ञान की स्थिति में इसका उस काल का नाम ज्ञात नहीं है किन्तु उसकी तत्कालीन संस्कृति पर विस्तृत प्रभाव था। यह तथ्य सुस्पष्ट है। इन प्रतिमाओं से प्रमाणित होता है कुछ भिन्नताओं के साथ इसे नग्न चित्रित करने की परम्परा थी। उत्तानपाद अवस्था में इनके पैर पूरी तरह फैले अलग–अलग है और जननांग पूरी तरह प्रदर्शित है। इन देवियों की पहचान में कोई एकरूपता नहीं है। इसे कभी–कभी पृथ्वीमाता या उत्तानपाद की देवी के रूप में प्रदर्शित किया गया है, इनकी पहचान में और यह कहा गया है कि यह एक ग्रीकोरोमन देवी है जिसकी संस्कृति ई0 शताब्दी के प्रारम्भ में आयात की गई।

दूसरी ओर उसे ऋग्वेद की आदिति उत्तानपाद के नाम से जाना गया यूरोप के उत्तर पूर्व–पाषाण काल की वीनसो और पश्चिमी एशिया की नवपाषाण काल की मातृदेवियों और भारत की तामृ–पाषाणकालीन देवी संस्कृति से इसके सम्बन्धों की सम्भावना की कल्पना की गई है।

भारतवर्ष में इन आकृतियों के सम्बन्ध में वास्तविक रूचि तब पैदा हुई जब माग्रेट की 'स्त्री उत्पादकता आकृतियाँ' नामक लेख प्रकाशित हुआ। जिसमें बौबोटाइप या योनि आकृतियाँ हैं, ये नग्न हैं। प्रायः उत्तानपाद है। मुरे की बौबो टाइप आकृतियों का सन्दर्भ देते हुए काड्रिग्टन ने भारतीय म्यूजियम लन्दन में प्राप्त मेढक के आकार की पकी मिट्टी की आकृतियों का वर्णन किया जिसमें इसी प्रकार की उत्तानपाद देवी को दिखाया गया है (चित्र–66–67)। काड्रिंग्टन का मानना है कि यह आकृति मथुरा से आयी है और इसका निर्माण दूसरी शताब्दी ई0 के प्रारम्भ में हुआ था। क्योंकि उनके लेख का मुख्य आधार भारतीय मूर्ति प्रतिमा कला और मुख्य रूप से मथुरा में उपस्थित कला को महत्व देना था जिसका निकटस्थ सम्बन्ध गान्धार कला से प्रतीत होता है। निसन्देह इस शास्त्रीय बौबो टाइप या योनि को सम्भवतः भारत में इसी काल में लाया गया था। दकन के आलमपुर म्यूजियम में सुरक्षित एक नग्न उत्तानपाद देवी की आकृति को स्टेला क्रामरिच ने प्रकाशित किया है।

प्रारूप–1 के चित्र में प्रदर्शित पैर जो पात्र के लिए आधारभूत पालने के समान है नारी धड़ के निचले भाग के बर्तन जैसी संरचना को मानवरूपकीय आधार देते हैं। प्रारूप–1 की प्रतिमाओं में स्तन भुजाओं और सिर का अभाव है। उदर भाग पर करधन रूपी आभूषण या मेखला जो प्रायः औरतें पहनती हैं देवी की मूर्ति पर भी है जो पूर्ण कुम्भ की सजावट का काम करती है, जिसके नीचे नितम्ब माना जा सकता है (चित्र 113)।

प्रारूप–1 की मूर्तियाँ छोटी हैं और पकी हुई मिट्टी या पाषाण द्वारा निर्मित हैं। उत्तानपाद पात्र प्रारूप–1 के उदाहरण स्वरूप बनी ये मूर्तियाँ पत्थरों से निर्मित है। वास्तव में मातृदेवी की सभी प्रकार की अधिसंख्यक मूर्तियाँ पाषाण की हैं। प्रारूप–1 की मूर्तियाँ दो वर्ग इंच से लेकर पाँच या छः इंच की चौड़ाई या ऊँचाई की है। इस तरह की मूर्तियों के सर्वाधिक उदाहरण महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले के तेर स्थान से प्राप्त हुए हैं। अन्य प्राप्य स्थल आन्ध्रा का एलेश्वरम् दक्षिणी महाराष्ट्र का बदगाँव और नेवासे हैं। ऐसे एक उदाहरण उत्तर प्रदेश में केवल कौशाम्बी से प्राप्त हैं।

वर्गाकार या अस्पष्ट कोणीय धातु पत्रों की पृष्ठभूमि पर उत्तानपाद की तरह के चित्र बनाये गये हैं। इस तरह के धातु पत्रों के उदाहरण तेर (चित्र–1–3) नेवासे (चित्र–4) और एलेश्वरम (चित्र–5) है जो प्रारूप–1 के स्पष्ट उपसमूह को प्रदर्शित करते हैं, जिसमें पैरों के नीचे बर्तन जैसी आकृति कमल दल के साथ निर्मित है। जनन नारी जननांग उस केन्द्रीय स्थल पर है जहाँ कमल पुष्प के बीज उगने का स्थान है यह प्रजनन की पृष्ठभूमि को दर्शाते हैं। धातु पत्रों के चारों किनारे उभरे और खाँच जैसी संरचना को एक साथ प्रदर्शित करते हैं। पात्र रूपी उदर से निकलने वाले कमल पुष्प धातु पत्र के शीर्ष पर बने हैं। इन उदाहरणों में सभी प्रारूप के उदाहरण हैं जिसमें पैर में नुपुर है, नाभि चिन्हित है और पैरों के ऊपर ढके हुए कपड़े उकेरे गये हैं। जिन्हें मूर्ति के पास तक लिपटा हुआ समझा जा सकता है।

कर्नाटक के सन्नाटी स्थल से प्राप्त पकी हुई मिट्टी की मूर्ति एक ही गोल्ड से बनी है (चित्र–7) किसी खोखले आकार में पिघलाकर डाली हुई धातु से बनी संरचना को गोल्ड कहते हैं इस स्थल की अन्य मूर्तियाँ प्रारूप–1 से भिन्नता भी प्रदर्शित करती है। कृष्णा नदी घाटी में सन्नाटी स्थान बौद्ध कला का केन्द्र रहा है, जैसा कि आधुनिक अध्ययनों से

पता चलता है। जिसका निर्धारण प्रथम और तीसरी शताब्दी के मध्य का है और अनुमानतः मूर्ति निर्माण तिथि की यही समय काल है।[1] मातृ–देवी की कुछ पुनर्निर्मित चित्र उल्लेख है[2] कोण्डापुर की एक पकी मिट्टी की मूर्ति (चित्र–8) तेर (चित्र–9) की मूर्ति तेर संग्रहालय[3] की सत्य अनुकृति जान पड़ती है। जो नकली मोल्ड से निर्मित है[4] यह 3.5 इंच ऊची है, प्रत्येक में पैरों के नीचे कमल दल आकृति है। जो पात्र के उठे हुए किनारों पर कमल पुष्प के रूप में प्रत्येक ऊपरी किनारों पर बना है और नितम्ब चारो तरफ से वस्त्र से ढका है जो देवियों द्वारा पहनी जाने वाली मेखला को प्रतिबिम्बित करता है।[5] नागार्जुन कोण्डा (चित्र–11) (इस स्थल से प्राप्त दूसरा उदाहरण) से प्राप्त पकी हुई मिट्टी की मूर्ति जिसे भूल बस स्तूप शीर्ष माना गया है और बौद्ध धर्म का प्रतीक माना गया है वास्तव में निरीक्षण दोष के कारण ऐसा समझा गया है। जबकि इस पर चार कमल दल समूह खुदे हुए हैं।[6] आन्ध्र–प्रदेश के विजयवाड़ा में स्थित विक्टोरिया जुबली संग्रहालय में रखी आन्ध्र–प्रदेश के गुंटूर जिले के कर्लापलेम की मातृ–देवी की मूर्ति बहुत कुछ पात्र जैसी है (चित्र–12) इसकी विशेषता यह है कि इसमें पैर पात्र के ऊपरी कन्धों पर जुड़े हैं, जबकि अन्य उदाहरणों में नीचे से जुड़े हैं। इसलिए यह प्रतिमा मातृ–देवी के चित्रों की पूर्णकुम्भ की प्राचीनतम पीढ़ी है।

प्रारूप–1 की विशालतम आकृति नागार्जुन कोण्डा की पाषाण प्रतिमा है (चित्र–42) इसका प्रथम प्रकाशन यह प्रदर्शित करता था कि इसमें निचला नारी धड़ एक मेखला के साथ प्रदर्शित है।[7] जब इस प्रतिमा का दूसरा टुकड़ा प्राप्त किया गया तो इसे उपरोक्त निचले धड़ के साथ पेट के साथ जोड़ दिया गया जब दोनों टुकड़े जोड़ दिये गये तो यह स्पष्ट हो गया कि मूल रूप से यह प्रतिमा कमर के ऊपर थी। चन्नाविरा (शारीरिक आभूषण जो गले से लटकता है स्तनों के बीच से गुजरता है और कमर तक पहुँचता है) को जब

पुनर्गठित कर लिया जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह देवी चालुक्य आकृतियों से अधिक साम्यता रखती है (चित्र–48 प्रारूप–3) जिन पर लगातार उसी प्रकार के आभूषण रखे गये हैं। नागार्जुन कोण्डा उदाहरण सम्भवतः उत्तानपाद रूप को पूर्णतः स्पष्ट नहीं करता जो (प्रारूप–1) में उल्लिखित है, यद्यपि इसकी तिथि तीसरी शताब्दी या प्रारम्भिक चौथी शताब्दी ईस्वी की लगती है।

प्रारूप–1 उदाहरण के किसी भी आकृति को उलट कर रख दे तो देखा जा सकता है कि बर्तन की आकृति वाला पेट का भाग या तो बन्द कमल की कली की तरह दिखता है या एक लिंग की तरह, उसका प्रवेश भाग ऐसा दिखता है कि यह योनि का बाह्य हिस्सा है और लिंग या कमल की कली का भाग है, यह आकृति एक विशाली कली और पात्र द्वारा बनी है।[8]

मारग्रेट दशवीं शताब्दी के तमिल ग्रन्थ तिरूमंतिरम के सांस्कृतिक स्लेषों का प्रयोग करते हुए कहती है कि आधुनिक सूचना जो प्राचीन ग्रन्थों से परिचित है कि योनि लिए प्रयुक्त श्लेष या पुष्पित फूल है या पका हुआ फल अर्थात योनि का वर्णन ऐसे कमल के फूल के रूप में किया गया है जो सूर्य के उदय और अस्त के समान एक लय के साथ खुलता और बन्द होता है। यह वह पात्र है जो ग्रहण करता है लिंग को एक बन्द कली या हरे फल के रूप में इन सब को मातृ–देवी की प्रतिमा से सम्बन्धित कर दिया गया। माग्रेट इसके पश्चात कहती है कि तिरूतंतिरम इस धारणा को प्रगट करता है कि जब कली फूल से मिलती है तो यह पूर्णतः खिल जाती है[9] हर प्रकार की मातृ–देवी प्रतिमा उदाहरण के लिए (चित्र–3, 21, 93) यह सुझाव प्रस्तुत करते हुए दिखती है कि कली और फूल का मिलना लिंग और योनि का मिलना है, (प्रारूप–3) प्रतिमाएँ जैसे नागनाथकोल्ला (चित्र–48) कुदाबेल्ली (चित्र–52) और दरसुरम (चित्र–54) में लिंग को स्पष्टतः प्रदर्शित

किया गया है। यह जो कली और लिंग का श्लेष प्रयोग है यह उस कलाकार की रचनापात्मक कल्पना है जिसने इन्हें एक साथ जोड़ा है।

क्रामरिच ने एक शिव मन्दिर के गर्भगृह में एक लिंग को योनि से निकलते हुए अंकन की ओर ध्यान आकर्षित किया है। वस्तुतः यह एक प्रतीकात्मक अंकन है।[10] मातृ–देवी का शरीर स्वतः एक आधार के रूप में इन आकृतियों में दिखायी देती है।

तेर और भीटा से प्राप्त प्रारूप–1 उत्तानपाद देवियों की तीन अन्य आकृतियों (चित्र–2–14) ऊपरी भाग पर अधिक जोर देती है, कमर को इस तरह प्रगट करती है कि वह एक उठते हुए लिंग को संकेत करते हुए दिखाई देती है।[11]

प्रारूप–1 मातृ–देवी के कुछ सामान्य उदाहरण जयरामस्वामी बड़गाम सतारा जिला, महाराष्ट्र (चित्र–73) में प्राप्त एक पट्टिका के ऊपर बहुआकृति वाली मूर्तियाँ प्रदर्शित की गयी हैं, उसके दाहिने तरफ ऊपर की ओर बैठे हुए साँड़ या बैल को उकेरा गया है यह बैल उसी धरातल पर है जहाँ देवी पीठ से टीकी है। बैल और मातृ–देवी की यह परस्पर स्थिति संकेत करती है कि इस देवी को इसी स्थिति में पूजा जाएगा।[12] यह पट्टिका लगभग तीसरी–चौथी शताब्दी ईस्वी की है।

प्रारूप–1 उत्तर–भारत में एकलौता उदाहरण कौशाम्बी–उत्तर प्रदेश में प्राप्त उत्तानपाद देवी है, यह मौलिक रूप से दक्षिण में बनी और उत्तर तक की (चित्र–16) यात्रा की इसक दक्षिण भारतीय मूल का होने के विरोध में यह तथ्य है कि इसकी डिजाइन, विस्तार दक्षिणी प्रकारों से भिन्न है, पेट के ऊपर एक डिजाइन काढ़ी गयी है जो सम्भवतः खिले हुए कमल के फूल को प्रकट करती है और उसके ऊपर एक त्रिस्तरीय आर्क है जो दक्षिणी उदाहरणों में नहीं मिलता, सम्भवतः ये आर्क आकृतियों के फ्रेम का कार्य करते हैं, जैसा कि कौशाम्बी से प्राप्त भारतीय म्यूजियम कलकत्ता में स्थित है (चित्र–21) आर्क

(मेहरॉव) यह याद दिलाता है कुषाण काल की मथुरा से प्राप्त मातृ देवियों की मूर्तियों को, जिसकी दृष्टव्य समानता इसके इस आकृति की उत्तरीय मूल की होने की सम्भावना दिखाती है, पेअ का भाग क्षतिग्रस्त है किन्तु उत्तानपाद पैर स्पष्ट है, प्रत्येक जाँघ पर एक कपड़ा लिपटा है। मिट्टी की यह पट्टिका लगभग 2.5 इंच है।

मातृ–देवी मूर्तियों का सबसे छोटा उदाहरण 7/8.7/8 इंच की मूर्तियाँ हैं (आकृति–17) जिसकी चोटी पर एक सूई जैसा छिद्र है जो योनि का द्वार दिखाती है और उत्तानपाद अवस्था एक आधार देने वाले पात्र का काम करती है। उत्तानपाद देवी की प्रारूप–1 प्रतिमाओं में कम से कम मानवी आकृति के रूप में स्पष्टतः दिखाई देने वाली प्राचीन भारतीय प्रतीक पूणर्पकुम्भा (जो एक पूरी तरह पुष्पित कमल के फूल) से सम्बन्धित पाया जाता है।[13]

प्रारूप–1 मातृ–देवी का उत्तानपाद पात्र मानवीय योनि के रूप में प्रस्तुत करता है और स्त्री की उत्पादकता शक्ति को प्रदर्शित करता है। प्रारूप–2 में जो कि भुजाहीन है, स्तनों को अधिक महत्वपूर्ण दिखाया है जो यह प्रदर्शित करता है कि यह अंग मातृपोषण का प्रतीक है।

प्रारूप–2 भुजाविहीन कमलवत सर

प्रारूप–2 के मातृ–देवी की प्रतिमाओं (चित्र–18–31) में पैरों का उत्तानपाद स्वरूप एक ऐसे कबन्ध का है जो किसी पात्र की तरह नहीं अपितु मनुष्य की तरह दिखाई देता है।

उत्तानपाद अंकन के पात्र प्रारूप–1 की प्रतिमाओं की तरह ही प्रारूप–2 की प्रतिमाएँ भी छोटी हैं, लगभग सभी पत्थर की हैं मात्र दो उदाहरण एक तेर से (चित्र–18) दूसरा कौशाम्बी से (चित्र–19) मिट्टी की पट्टिका पर हैं पत्थर की बनी आकृति महाराष्ट्र के

निम्नलिखित क्षेत्रों से प्राप्त होती है। तेर, महुरझारी, पौनार, मंधल, मंदापुरी, हमलापुरी, रामटोला, पौनी, मंसार और अलापुर मध्य प्रदेश में साँची और उत्तर प्रदेश में कौशाम्बी में पायी जाती है। एक आकृति किसी अन्जान स्थान से प्राप्त हुई है वह पटना बिहार के कनोरिया संग्रहालय में सुरक्षित है (चित्र–20)।

तेर (चित्र–18) और कौशाम्बी (चित्र–19) की मूर्तियों को एच0डी0 सांकालिया ने पहली से तीसरी शताब्दी का माना है, जबकि एस0सी0 काला[14] और डगलस ने दक्षिण भारतीय टेराकोटा मूर्तियों की तुलना में इन्हें दूसरी और तीसरी शताब्दी ईस्वी का माना हैं सांकालिया का अनुकरण करते हुए मुखोपाध्याय ने कौशाम्बी से प्राप्त एक प्रस्तर आकृति (चित्र–21) (जो इस समय भारतीय संग्रहालय कोलकाता में है) को पहली से तीसरी शताब्दी ईस्वी का माना है।[15]

मातृ–देवी के सभी चार स्वरूप महाराष्ट्र में पाये जाते हैं, किन्तु कमल–सर वाला प्रारूप–2 आकृतियाँ जो भुजाहीन हैं, इस क्षेत्र में विशेष रूप से नागपुर के आसपास बहुत ही लोकप्रिय थी जो यहाँ से प्राप्त इन आकृतियों की जाँच करने से चौथी से छठीं शताब्दी ईस्वी की लगती हैं। आन्ध्र–प्रदेश से मातृ–देवी के प्रारूप–2 की मूर्तियों के दो उदाहरण मिलते हैं (चित्र–104–105) आकृतियों के कमलवत् सर वाली भुजाविहीन प्रारूप–2 की आकृतियों के सबसे साधारण स्वरूप मं भुजाहीन धड़ फैले हुए उत्तानपाद पैरों पर टिका है और एक कमल का फूल स्तन के ठीक ऊपर टिका है ऐसा एक उदाहरण तेर (चित्र–18)[16] दो उदाहरण कौशाम्बी (चित्र–119–21)[17] और पौनार (चित्र–24–25)[18] से प्राप्त है, इनमें देवी पाजेब पहने हुए हैं, किन्तु जांघों पर कोई वस्तु नहीं है।

प्रारूप–2 की मूर्तियों के एक दूसरे स्वरूप में कमलवत सर के दोनों ओर कमल का फूल और कली जोड़ दी गयी है यहाँ तक कि बिना भुजाओं वाले कमल के फूल की

स्थिति वही है जो प्रारूप–3 में है जिनमें हाथ कलियों को पकड़े हुए है। प्रारूप–2 की आकृतियाँ जो साँची (चित्र–26) तेर (चित्र–27)[19] अलापुर से दो (चित्र–22–23)[20] पौनी से (चित्र–28) से प्राप्त हुई है लगभग वैसी ही है जिनमें कमल के फूल वाले सर में कमल पंखुड़ियाँ गायब हैं। अलापुर उदाहरण (चित्र–23) में प्राप्त दो आकृतियों में से एक की टाँगों पर वस्त्र है।

कनोरिया संग्रहालय पटना में सुरक्षित मातृ–देवी की 3 4/5 इंच ऊँची प्रतिमा कमल के सर वाली बिना भुजाओं वाली प्रारूप–2 आकृति का विशिष्ट नमूना है (चित्र–20) इस प्रतिमा और प्रारूप–2 की अन्य प्रतिमाओं में मुख्य अन्तर यह है कि जहाँ अन्य प्रतिमाओं में कमल की पंखुड़ियाँ कमलरूपी सर के अगल–बगल रखी गई हैं वहीं इस प्रतिमा में जहाँ कन्धे मिलते हैं उनके पार्श्व में रखी गई हैं। यह विशिष्ट उदाहरण इनाडी (चित्र–125) से बहुत कुछ मिलता–जुलता है।

रामातोला भान्द्रा जिला, महाराष्ट्र से प्राप्त दो उदाहरण इस समय केन्द्रीय संग्रहालय नागपुर (चित्र–29–30) में रखे गये हैं। कौशाम्बी में तेर में प्राप्त प्रतिमाओं की तरह इन दोनों उदाहरणों में भी भुजाहीन देवी अपने कमल के फूल के सिर के दोनों ओर कमल फूल ही रखती है। यह दोनों (कौशाम्बी और तेर) रामतोला उदाहरण से इस मामले में भिन्न है कि रामतोला की प्रतिमाओं में एक आयताकार प्रस्तर पट्टिका हैं जिसमें दो छोटे–छोटे कुण्ड बाई तरफ हैं। पट्टिका पर कुण्डों का निर्माण इस प्रतिमा के पूजा के महत्व पर जोर देता है और इस बात पर भी जोर देते हैं कि देवी की उपासना पानी के स्रोत के निकट करनी चाहिए।

प्रारूप–2 आकृतियों के चार अन्य उदाहरण जो (चित्र–22, 23, 26, 30) में दर्शाये गये हैं बहुकोणीय पट्टिका पर अपने कमलरूपी सर के साथ है। किन्तु देवी के दाहिने ओर

एक साँड़ या बैल बैठा हुआ है और बायीं ओर एक उपासक भी है (चित्र–93, 95) साँड़ या बैल लेटी हुई देवी प्रतिमा के ठीक सामने बैठी हुई स्थिति में है, इस स्थिति में बैठे हुए बैल बड़गाँव उदाहरण को स्मरण दिलाता हैं (चित्र–71) किन्तु यहाँ बैल देवी से छोटा है। चारो उदाहरण महाराष्ट्र से हैं। एक नागपुर जिले के हमलापुरी[21] से दो वर्धा जिले के पौनार से (चित्र–92, 93)[22] और एक नागपुर जिले के मंसार से ये सब चौथी से छठीं शताब्दी ई0 की है। प्रारूप–2 प्रतिमा के अन्य उदाहरण उत्तरवर्ती तिथि के हैं और उनकी मूर्तिकला बहुकोणीय पट्टिका पर थोड़ी भिन्न है (चित्र–92, 93 और 98)।

प्रारूप–2 मातृ–देवी की एक बड़ी प्रस्तर प्रतिमा महाराष्ट्र के यवतमाल जिले में शारदा आश्रम में पूजी जाती हैं, यद्यपि ये मौलिक रूप से नागपुर के निकट महुरझारी के निकट पायी जाती है (चित्र–31)[23] इसकी तुलना प्रारम्भिक चालुक्य काल की प्रतिमाओं से की जा सकती है इसलिए इसे सातवीं शताब्दी ई0 का माना जा सकता है। किन्तु इसकी मूर्तिकला चालुक्य काल की मूर्तिकला से भिन्न है। प्रारम्भिक चालुक्यों द्वारा निर्मित मातृ–देवी प्रतिमा का एक मात्र उदाहरण जो प्रारूप–3 का है और भुजाओं सहित पाया गया है। प्रारूप–2 की मात्र यही एक ऐसी प्रतिमा है जो सातवीं शताब्दी ई0 के बाद की है। ओ0पी0 मिश्रा का सुझाव है कि प्रारूप–2 की यह प्रतिमा नवीं से दशवीं शताब्दी ई0 के मानी जा सकती है।[24] मध्य–प्रदेश की मलहार प्रतिमाएँ प्रारम्भिक उदाहरणों से मात्रा और गुण में थोड़ी सी अलग हैं, क्योंकि यह प्रारम्भिक प्रतिमाओं से अधिक मध्ययुगीन दिखायी देती हैं।

प्रारूप–3 भुजायुक्त कमलवत सर

मातृ–देवी के प्रारूप–3 के सभी चित्र कमल शीर्ष युक्त हैं। (चित्र–32, 64, 99, 103, 106–107) पैर उत्तानपाद स्थिति में हैं। दोनों हाथ ऊपर की ओर कमल शीर्ष के दोनों ओर स्थित हैं। प्रत्येक हाथ में एक पुष्पकली है और वक्षस्थल उभार द्वारा दर्शाया गया है।

प्रारूप–2 और प्रारूप–3 के अन्तर मुख्यतः बाँहों का है, प्रारूप–3 में बाहें हैं, प्रारूप–2 भुजाविहीन है। हिन्दू देवियों के विपरीत मातृ देवी की दो से आंशिक भुजाएँ कभी भी नहीं दर्शाया गया। भारतीय कला में किसी देवी की भुजाहीन आकृति प्रारूप–1 और प्रारूप–2 अपने आप में विलक्षण हैं। हिन्दू देवी देवताओं में बहुभुजी के प्रत्येक हाथ में कोई न कोई वस्तु किसी विशेष शक्ति और किसी महापुरूषीय की संचित शक्ति को प्रदर्शित करने के लिए होती हैं प्रारूप–1 और प्रारूप–2 में इन चीजों के न होने के पीछे ये विचार रहा होगा कि मातृ–देवी की उत्पादक और सृजनात्मक शक्ति को भुजाओं में धारण की हुई वस्तुओं से प्रदर्शित करने के बजाय उसके शरीर और शरीर के निश्चित बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट किया जाय (जैसे वक्षस्थल और योनि) जब देवी दो भुजाओं से युक्त है जैसे कि प्रारूप–3 और प्रारूप–4 में, तो उन्होंने कमल की कली या फूल को धारण कर रखा है, यह उत्पादक और सृजन को प्रदर्शित करने का उपयुक्त प्रतीक है। परिपक्व, प्रस्फुटित शीर्ष के दोनों ओर धारण की हुई कमल कलिकाएँ नवजीवन क्षमता को प्रदर्शित करती है। जीवन चक्र का लगभग इसी तरह का प्रतीक नागार्जुन कोण्डा और साँची जैसे स्थलों से मिले पूर्ण–कुम्भ कलाकृतियों में भी मिलता है, जहाँ प्रत्येक कलाकृति, धड़, कुम्भ के शीर्ष पर एक कमल कलिका हैं एक पूर्ण रूप से खिला कमल है और मुर्झाया फूल है। जो कि शैशवावस्था या परिपक्वावस्था और वृद्धावस्था या मृत्यु का प्रतीक है।

प्रारूप–3 के अधिकतर चित्र दक्षिण में मिलते हैं। कर्नाटक और आन्ध्र में प्रारम्भिक चालुक्य काल सातवीं शताब्दी के अवशांत के आस–पास के लगभग सभी उदाहरणों में प्रारूप–3 ही मिलता है। एक विलक्षण प्रतिमा महाराष्ट्र (चित्र–96) के पौनार से प्राप्त हुई है जो पुरातात्विक रूप से प्रारूप–2 और प्रारूप–3 के बीच की पड़ती है। यह छोटी बहुचित्रित प्रस्तर पट्टिका 5 1/4 इंच से 7 इंच तक देवी उत्तानपाद मुद्रा में है। वक्ष और

कमलवत सिर है।[25] उसकी विलक्षणता यह है कि उसके बाहर की तरफ पूर्ण रूप से खिला हुआ कमलवत सिर है। वहाँ पर दोनों तरफ कमल की नाल कलियों के साथ है, यह नाल प्रत्येक उठे हुए घुटने के नोक को स्पर्श करता है, ठीक उसी तौर तरीके से प्रारूप–3 और प्रारूप–4 में कलियों को पकड़े हुए हाथ हैं, नाल को हाथ के रूप में दिखाया गया है जिसके प्रत्येक हाथ में एक कमल की कली है यह मानक प्रारूप–3 का है। इस प्रतिमा में जहाँ हाथों को जोड़ा जाता है वे बहुधा कमल के फूल के लहराते हुए नाल के प्रकार की तरह हैं। उदाहरणार्थ नागनाथ प्रतिमा में (चित्र–48) कमल की कली का नाल जो प्रत्येक हाथ में है कलाई पर उसी तरह लपेटता है जैसे चूड़ी हाथों को, अंगुलियाँ कमल की तन्तुओं की तरह झुकी है। पौनार की इस उभरी हुई नक्कासी में देवी पत्तियों की रूपरेखा का हार पहनती है। मातृ–देवी की कलाई पर लिपटती कमल की कली उसके स्वभावगत अति प्रजनन शक्ति और एक जीवट (सजीव) रूपक द्वारा उसके दैवी मानवीय सृष्टि से सम्बन्धित करता है कमल का पौधा अति शानदार असीमित जीवन की शुद्ध प्रजनन शक्ति का प्रतीक हैं पौनार की इस बहुचित्रित पट्टिका पर देवी के दाहिने तरफ साँड़ है, बायीं तरफ स्त्री या पुरुष की झुकी हुई प्रतिमा है जो कि एक भक्त हो सकता है वह भक्त देवी के दोनों तरफ पट्टिकाओं पर चित्रित है जबकि बैल या साँड़ देवी के दूसरी तरफ पाया जाता है।

प्रारूप–3 की प्रतिमा बहुत छोटी है लगभग 2.5 या 5.5 इंच तक या वे अत्यधिक विशालकाय है लगभग 37–41 वर्ग इंच तक। विशालकाय प्रतिमा प्रस्तर की ओर उपमन्दिरों में मूर्ति प्रतिमा के रूप में प्रयोग किया जाता था जैसा कि सिद्धानकोला कर्नाटका (चित्र–43) बेल्लीगाँव कर्नाटका (चित्र–16) स्थल से प्राप्त प्रतिमाएँ साक्ष्य हैं। दूरसूराम तमिलनाडु (चित्र–54) में ऐसी ही प्रतिमा की अब भी पूजा की जाती है। कुदावेल्ली (चित्र–52) से एक

प्राप्त प्रतिमा आलमपुर संग्रहालय में रखी गयी है। प्रारूप–3 मातृ–देवी मुख्यतः आन्ध्र–प्रदेश, कर्नाटका, महाराष्ट्र, उत्तर–प्रदेश और गुजरात में पायी जाती है। प्रारूप–2 की छोटी पकी हुई मिट्टी की प्रतिमा और कुछ छोटी प्रस्तर की प्रतिमा उत्तरी स्थल की है, प्रारूप–3 की सभी विशालकाय प्रस्तर प्रतिमाएँ तथा कुछ छोटी प्रस्तर प्रतिमाएँ दक्षिणी स्थल की हैं। केवल एक छोटी पकी हुई मिट्टी की प्रतिमा का ज्ञान हमें दक्षिण से होता है। आन्ध्र–प्रदेश (चित्र–32) तथा एलेश्वरम्[26] भीटा (चित्र–33) से प्राप्त प्रारूप–3 की पकी हुई मिट्टी की प्रतिमा जो 4 5/8 इंच के व्यास नट्टिका के रूप में है इस पट्टिका को भारत के कलकत्ता संग्रहालय में रखा गया है। मार्शल महोदय ने उत्खनन के साक्ष्यों से इसकी तिथि का निर्धारण कुषाण–काल से गुप्त–काल अर्थात् पहली शताब्दी से पाँचवीं शताब्दी ई0 माना है।[27]

कौशाम्बी से मातृ–देवी की पकी मिट्टी की कुल 11 प्रतिमाएँ मिली हैं। कौशाम्बी बौद्ध धर्म की प्रसिद्ध स्थली थी जो इलाहाबाद के उत्तर पश्चिम में 32 किलोमीटर की दूरी पर यमुना नदी के तट पर स्थित था। इन 11 प्रतिमाओं में 4 प्रारूप–3 से हैं।

पटना संग्रहालय में कौशाम्बी से प्राप्त मातृ–देवी की प्रतिमा युक्त चतुष्कोणीय पट्टिका के रूप में पहचाना। पटना संग्रहालय में रखी गयी कौशाम्बी प्रतिमा (चित्र–34) वैसी ही है जैसी बुन्देलखण्ड संग्रहालय से प्राप्त प्रस्तर की प्रतिमा के हाथ और पैर की मुद्रा त्रिकोणात्मक है। बुन्देलखण्ड प्रतिमा के सिर पर कमल के विस्तार का साक्ष्य है। यह पट्टिका 5 वर्ग इंच की है।[29] इसका तिथि क्रम दूसरी से तीसरी शताब्दी ई0 दिया गया है। इलाहाबाद नगर पालिका संग्रहालय में कौशाम्बी से प्राप्त मातृ–देवी की एक बड़ी सी प्रतिमा रखी गयी है जो भुजाओं और पैरों की कोणात्मक स्थिति लिये हुए है (चित्र–37)। ये चार आकृतियाँ (चित्र–33, 34, 36, 37) कोणात्मक भुजाओं पैरों और कमलवत् सिर का

एक दलीय प्रारूप प्रगट करती हैं। ये तीन स्थानों से हैं, भीटा और कौशाम्बी जिला इलाहाबाद, उत्तर–प्रदेश और एक रीवाँ जिला मध्य–प्रदेश से प्राप्त हुई हैं। ये आकृतियाँ तीसरी से चौथी शताब्दी की हैं, भीटा का उदाहरण सम्भवतः चौथी से छठीं शताब्दी ई0 की हैं।

झूँसी उत्तर–प्रदेश से प्राप्त एक उदाहरण जो इलाहाबाद नगर पालिका संग्रहालय में है (न0 6417) एक हस्त निर्मित लाल रंग से रंगी मृदापट्टिका पर है (चित्र–38) यह आकृति दूसरी से चौथी शताब्दी ई0 की मानी गयी है। इस प्रतिमा में कमलरूपी सर को मुकुट की तरह प्रस्तुत किया गया है। ऊपरी बाँह और पैर का निचला हिस्सा टूट चुके हैं, नाभि एक क्रास की तरह है। स्तन गुथे हुए हैं जैसे कोई हार मेखलाबद्ध हो, गुप्तांग को पूर्ण विस्तार में दिखाया गया है। इस प्रारूप–3 की आकृति का निचला हिस्सा वर्तत की तरह नहीं है बल्कि इनकी कमल पतली दिखाई गई है।

कौशाम्बी, उत्तर–प्रदेश से प्राप्त एक उदाहरण जो राजकीय संग्रहालय लखनऊ में है (चित्र–39) की तिथि चौथी शताब्दी ई0 की मानी गयी है, यह उत्तर कुषाण काल की है। यह हार्ले द्वारा प्रकाशित मृदा पट्टिका पर उत्कीर्ण गजलक्ष्मी से साम्यता रखती है।[30] प्रारूप–3 की यह आकृति कमलरूपी सर, अधखुले फूल की तरह मुकुट के रूप में रखा गया है, कमल रूपी सर थोड़ा सा आगे की ओर झुका है, और एक कमल के हार पर टिका है, स्तन बहुत सावधानीपूर्वक निर्मित है, बचा हुआ हाथ इस आकृति में खाली है, और बाँह में बहुत सारी चूड़ियाँ हैं। कौशाम्बी से प्राप्त प्रारूप–3 की एक मातृ–देवी की प्रतिमा पटना म्यूजियम में है (चित्र–40), लाल बलुआ पत्थर पर सर पूर्णपुष्पित कमल का फूल है। इन दोनों आकृति को बगल से देखने पर पहिये की तरह कुछ अंकित है यही झूँसी और कौशाम्बी से प्राप्त उदाहरण में मुकुट की तरह देखा जा सकता है।

ज्यादातर प्रारूप–3 की कमलरूपी सर वाली ये आकृतियाँ सातवीं और नवीं शताब्दी के बीच में निर्मित हैं, किन्तु नागार्जुनकोण्डा में प्राप्त प्रस्तर आकृति प्रारम्भिक चौथी शताब्दी में निर्मित है।

1940 में नागार्जुनकोण्डा पहाड़ी के उत्तरी ढलान पर एक हिन्दू मन्दिर के स्तम्भ युक्त हाल के ध्वंशावशेष में मातृ–देवी संगमरमर पर उत्कीर्ण पायी गई (चित्र–42) इसकी सूचना एच0के0 नरसिम्हास्वामी[31] द्वारा दी गई। शिलालेख के निचले भाग ब्राह्मी लिपि में एक पंक्ति खुदी है, जिसमें लिखा गया है सफलता। इसे रानी महादेवी खामदुउल्ला ने बनवाया था जो महाराजा श्री एहूवाला चमतामुला की पत्नी है। जिसके पति और बच्चे जीवित थे। शिलालेख के उत्कीर्ण पंक्ति में देवी का नाम नहीं है किन्तु यह संकेत देती है कि इस देवी के पूजा`क कारण ही रानी के पति और बच्चे जीवित हैं, दूसरी औरतें भी इसकी पूजा करके रानी जैसी ही भाग्यशाली हो सकती हैं। आज भी भारत में इसी प्रकार की पूजा के लिए प्रेरणा प्राप्त होती है नागार्जुनकोण्डा की इस प्रतिलिपि की पहचान तीसरी या चौथी शताब्दी ई0 की है दूसरी मातृ–देवी प्रतिमाओं की तरह इसे भी बौद्ध प्रभाव वाले स्थान के एक छोटे हिन्दू मन्दिर नोडागिसवरस्वामिन में पाया गया। ध्वजास्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख से स्पष्ट है कि यह मन्दिर इक्ष्वाकु राजा एहुवाला चकतामुला के शासन काल में निर्मित हुआ। इक्ष्वाकु राजा एहुवाला चमतामुला के शासन काल को कतिपय विद्वानों ने तीसरी सदी ईस्वी के उत्तरार्ध का तथा कुछ अन्य में चौथी सदी ईस्वी के पूर्वार्ध का माना है।[32]

यह विशाल संगमरमर प्रतिमा क्षतिग्रस्त है, टांगे और पेट सुरक्षित है, नरसिम्हा स्वामी स्पष्ट करते हैं कि पेट एक अलंकृत पूर्णघाट की तरह है, जिसका प्रस्तुतीकरण नागार्जुनकोण्डा काल के बौद्ध शिल्प में सामान्य विशेषता है, (चित्र–113)[33] योनि को एक

रेखा द्वारा चिन्हित किया गया है, टखनों को चूड़ियों से सजाया गया है और पेट के चारों ओर एक आभूषणबद्ध मेखला है, पैरों के तलवे थोड़ा सा ऊपर उठे हुए हैं, पैरों के अँगूठे फैले हुए हैं, यह एक चन्नविरा की तरह है, इस प्रतिमा को एक समतलीय पट्टिका पर उत्कीर्ण किया गया है। यह प्रतिमा भग्न है। यह प्रतिमा प्रारूप–1 जैसी हो सकती है इसके प्रारम्भिक तिथि और दक्षिणी उत्पत्ति के आधार पर इसके छिन्न–भिन्न स्वरूप के कारण इसे प्रारूप–2, प्रारूप–3 या प्रारूप नहीं माना जा सकता है।

इस प्रतिमा का शरीर एक वेदी पर उकेरा हुआ है जैसी कि आलमपुर म्यूजियम की कुदाबेल्ली की प्रतिमा (चित्र–52) एक दूसरी प्रतिमा जो आलमपुर में अभी भी पूजी जाती है (चित्र–46) इनकी पूजा परिक्रमा द्वारा तथा घी के प्रयोग द्वारा की जाती है। इस तरह की पूजा सिद्धानकोला या आलमपुर के बाल ब्रह्मा मन्दिर के प्रतिमाओं की पूजा आज भी होती है।

सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रारम्भिक चालुक्य राजाओं के शासन काल में मातृ–देवी का विशेष महत्व था, प्रारम्भिक चालुक्य राजा दकन के पठार के ऊपर शासन करते थे जो आज के कर्नाटक, आन्ध्र और महाराष्ट्र के कुछ भागों को मिलाकर बना था। इस काल में बारह विशाल प्रस्तर प्रतिमाएँ जो मातृ–देवी की हैं, प्राप्त हुई है। ये सभी प्रारूप–3 कमल रूपी सिर वाली भुजायुक्त और स्तन सम्मिलित हैं, टांगें उत्तानपाद स्थिति में हैं। चालुक्य काल की प्रतिमाएँ मात्र प्रारूप–3 की हैं। चालुक्य काल में मृदापट्टिका पर बनी हुई या आकार में छोटी मातृ–देवी प्रतिमाएँ नहीं प्राप्त हैं जो प्राप्त हैं वो विशाल हैं तीन से चार फुट तक इन्हें पत्थर की सतह पर उत्कीर्ण किया गया है। शिव को समर्पित सातवीं शताब्दी के मन्दिरों के सामने एक छोटे से मन्दिर में मातृ–देवी की स्थापना की

गयी थी। मातृ–देवी मन्दिर को सप्तमात्रिका मन्दिर के साथ समभाव में रखा जा सकता है।

चालुक्य काल के दो मन्दिर सिद्धानकोला में लकुलिस मन्दिर और आलमपुर का बाल ब्रह्मा मन्दिर की प्रतिमाओं की पूजा आज भी होती है जिन औरतों को बच्चा नहीं होता था वे युगल जो बच्चा होने का आशीर्वाद चाहते हैं, वे इन मन्दिरों की यात्रा करते हैं, यह परम्परा आज भी है। चालुक्यों का हर स्थान बादामी और पट्टाडकल को छोड़कर कम से कम देवी की एक प्रतिमा अवश्य रखता है चालुक्य मन्दिरों के मुख्य शिव मन्दिर के सह मन्दिर में मातृ–देवी की आज भी पूजा होती है[34] और इसके ठीक सामने सप्तमात्रिकाओं का भी एक सह मन्दिर स्थापित है, सप्तमात्रिकाओं का मन्दिर बकरे के सिर वाली पुरूष आकृतियों द्वारा सुरक्षित है। इन मन्दिरों में बहुत सी मातृ–देवी की प्रतिमाएँ पशुपति को समर्पित हैं। जिनमें सिद्धानकोला और महाकुटा के मन्दिर भी हैं। एलोरा गुफाओं का 21 मन्दिर जहाँ मातृ–देवी उत्कीर्ण है पशुपति को समर्पित है और एलीफैन्टा में जहाँ मातृ–देवी की प्रतिमा है वह भी सम्भवतः पशुपति को समर्पित है।

सिद्धानकोला में मातृ–देवी की प्रतिमा अपने मौलिक स्थान पर है और यह कर्नाटक में चालुक्यों की मन्दिर नगरी ऐहोल की बाहरी पहाड़ियों पर स्थित है, यहाँ सातवीं शताब्दी के उत्तरवर्ती काल का एक चालुक्य मन्दिर है जो लकुलिस को समर्पित है, इन्हें पशुपति सम्प्रदाय का संस्थापक माना जाता है। मन्दिर के दक्षिण पूर्व में एक प्राकृतिक उद्यान है जहाँ पर एक देवी है इस देवी को जिसे स्थानीय लोग मातृ–देवी के नाम से जानते हैं, इस उद्यान के पथरीले फार्म पर देवी को उत्कीर्णन किया गया है (चित्र–43)[35] एक जल प्रपात जो ऊपर से आता है, देवी के बगल से गिरता है, और पर्वत के नीचे चला जाता है।

इस प्रतिमा का कमल रूपी सर विशाल है उसके दोनों हाथ उसके सर को दोनों ओर उठे हुए हैं, किन्तु हाथों में कमल की कली की जगह कुछ नहीं है। उसके टाँगों और पीठ पर एक वस्त्र धागे की तरह लपेटा गया है, जो प्रारम्भिक चालुक्य काल में प्रायः पाया गया है। देवी पैजनी बाजूबन्द और चन्नवीरा पहनी है, पैर ऊपर की ओर उठा है जिससे तलवे दिखाई देते हैं, उसकी टाँगों की स्थिति उत्तानपाद अवस्था को एक आकार देती है।

मातृ–देवी की सरविहीन प्रतिमा मन्दिर की ओर जाने वाली सीढ़ियों के बगल में एक चट्टान पर उकेरी गई है (चित्र–44) यह प्रतिमा केवल पथ संकेत के लिये है और यह चालुक्य काल के बाद की लगती है। स्थानीय लोगों के अनुसार सिद्धानकोला में मातृ–देवी प्रतिमा की पूजा योनि में घी के प्रयोग से की जाती है[36] इस स्थान की यात्रा करने वाले युगल तीर्थयात्री या औरतें बच्चों से भरे हुए छोटे–छोटे गुड़ियानुमा घर बनाती है और इसका प्रारम्भ वह मन्दिर पहुँचने के एक मील पहले कर देते हैं।

मन्दिर के ठीक उत्तर–पूर्व में सप्तमात्रिकाओं से सुसज्जित एक छोटा सा मन्दिर बना है जो चालुक्य कला का प्रतीक है और एक बड़े से पत्थर की पट्टिका पर बना है इस मन्दिर का प्रवेश दो बकरी नुमा सिर वाले सन्तरियों से सुरक्षित है (चित्र–45) जिन्हें दक्ष के रूप में पहचाना जाता है जो दबी अदिति का पुत्र और गौरी का पिता है या नैगमेसा के रूप में जाना जाता है जो स्कन्द का पुत्र भाई या सह खिलाड़ी है।

दूसरे स्थान से प्राप्त चालुक्य अवशेषों से तुलना करने पर इस प्रस्तर उद्यान में प्राप्त मातृ–देवी की तिथि जो सिद्धानकोला के लकुलिस मन्दिर के साथ ही है सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध की मानी जा सकती है।

चालुक्य काल की एक और कमलरूपी सर वाली की प्रारूप–3 की मातृ–देवी की पूजा आन्ध्र–प्रदेश के कुरनूल जिले के आलमपुर में होती है। इसे एक आधुनिक सह–मन्दिर में स्थापित कर मुख्य शिव मन्दिर में जोड़ दिया गया, बाल ब्रह्मा मन्दिर प्रारम्भिक चालुक्य शासन काल में सातवीं शताब्दी में बनाया गया (चित्र–46) इसका सर कमल के फूल का है उसके दोनों हाथों में जो उसके सर के बगल में है कमल की पंखुड़ियाँ हैं, जिसका डंठल कलाइयों से लिपटा हुआ है, जो बाजूबंद और कंगन की तरह दिखाई देता है, यह प्रतिमा लगभग 3.5 फुट वर्गाकार है और स्पष्ट रूप से प्रारम्भिक चालुक्य वास्तुकला का नमूना है। बाल ब्रह्मा मन्दिर सिद्धानकोला के लकुलिस मन्दिर की तरह चालुक्य काल का एक शिव मन्दिर है, जिसकी तिथि लगभग 660 ई0–90 ई0 है।[37]

दक्षिण पूर्व कोने में स्थित सह–मन्दिर में चालुक्य काल के पश्चात की एक चामुण्डा मूर्ति इस सह मन्दिर के भीतर रखी गयी है, जो चालुक्य काल की एक बकरे के सर वाले सन्तरी के बगल में है (चित्र–47–ए) सप्तमात्रिकायें सम्भवतः सिद्धानकोला की तरह बकरे के सिर वाले सन्तजरियां द्वारा रक्षित थी।

इस सहमन्दिर के सामने एक दूसरा मन्दिर है जिसमें तीन सीढ़ियों वाला शिखर है जिसका नाम भूमि प्रसाद है जिसकी चोटी पर एक आमलक की टोपी है और एक पूर्णकुम्भ है। यदि बाल ब्रह्म मन्दिर और उसके सह–मन्दिर अपने समकालीन, सिद्धानकोला मनिदर के समकक्ष हैं तो पवित्र देवी की प्रतिमा मौलिक रूप से पूर्वोत्तर स्थित सह–मन्दिर में स्थापित थे और उसे वर्तमान स्थिति से अधिक हटाया नहीं गया है, आलमपुर में इस देवी को रेणुका कहते हैं।[38]

प्रारम्भिक चालुक्यों का तीसरा मन्दिर जहाँ मातृ–देवी पायी गयी नागनाथ कोल्ला में है। नागनाथ या शिव मन्दिर चालुक्य की राजधानी बादामी जिला बीजापुर, कर्नाटका[39]

के बाहरी भाग में एकान्त में है। इस स्थान पर देवी की एक शानदार प्रतिमा पायी गयी जो इस समय बादामी संग्रहालय में है (चित्र–48) यह अपने विस्तार और सूक्ष्म उत्कीर्णन में सबसे सुन्दर मातृ–देवी प्रतिमा है, मन्दिर की तरह प्रतिमा का भी उत्कीर्णन लाल बलुआ पत्थर हुआ है।

नामनाथकोला मातृ–देवी की प्रतिमा आलमपुर के बाल ब्रह्मा मन्दिर के समानान्तर दिखाई देती है।[40] इनमें से एक महाकुटा (चित्र–50) और दूसरा चिक्कामहाकुटा (चित्र–51) में है।[41] नागनाथ आकृति 9.5 इंच भीतर की ओर काट कर बनी है और ये 38 इंच ऊँची और 28 इंच चौड़ी है (चित्र–48) बच्चे के जन्म के पश्चात् औरत के पेट के मांस का सिकुड़ा हुआ भाग अद्वितीय है, छातियाँ दृढ़ हैं जिसके नीचे मांस की परतें परी हैं बाँहें और कन्धे सुन्दर औरतनुमा हैं, टाँगे जो उत्तानपाद स्थिति में हैं अधिक स्वाभाविक रूप से फैली हैं घुटने ऊपर हैं पैरों के तलवे ऊपर की ओर हैं और अँगूठे तने हुए हैं। नग्न बदन एक हार द्वारा सज्जित है, चन्नवीरा मेखला, बाजूबन्द भुजाओं को घेरे हुए है, जिनका अन्त एक पत्ते में हुआ है पायजेब भी वनस्पतियों की तरह है, जाँघों पर एक कपड़ा लिपटा है।

अधकुला कम का फूल कन्धे पर है, देवी अपने सर को दोनों ओर अधखिला छोटा कमल का फूल अपने दोनों हाथों में लिये हुए हैं, जिसका डंठल उसके हाथ को लपेटे है, अंगुलियाँ डंठल जैसी दिखती हैं, दाहिने हाथ की अँगुलियाँ स्वास्तिक का निर्माण करती हैं, जो भाग्य और सुख का प्रतीक है, इसका सम्बन्ध पौनार (चित्र–96) की तरह वनस्पतियों की ओर झुका है।

बादामी के निकट महाकुटा में मातृ–देवी की एक विशाल खण्डित प्रतिमा है (चित्र–50) महाकुटेश्वर मन्दिर जो शिव को समर्पित है के दक्षिण पूर्व में स्थित छोटे से

लकुलिस मन्दिर में यह रखी गयी है, यह मन्दिर चालुक्य काल का है, जो सम्भवतः सातवीं शताब्दी के अन्तिम समय का है।[42]

सन् 1881 में जान फेथफुलफ्लीट ने कर्नाटक के महाकुटा (बीजापुर जनपद कर्नाटक) के ऐसे चित्रों के प्रति ध्यान आकृष्ट किया, जिसमें कुछ नटखट, सिरविहीन अमर्यादित पत्थर की पार्वती देवी की प्रतिमाएँ मातृ–देवी के नाम से जानी जाती है।[43]

महाकुटेश्वर प्रतिमा जो अब खण्डित है सम्भवतः बादामी म्यूजियम में स्थित नागनाथ प्रतिमा की जुड़वा है, यह प्रतिमा ऊचाई में 39 इंच गहराई 8 इंच है। नागनाथ प्रतिमा की तरह इसमें भी पायजेब है और कमल के फूल वाले सर के बगल में पंखुड़ियाँ नहीं है वरना खिला हुआ कमल का फूल है। इन प्रतिमाओं को सम्भवतः एक ही आदमी ने बनाया या फिर एक ही प्रतिमा की नकल मात्र है।

क्रामरिच द्वारा अदिति उत्तानपाद के रूप में प्रकाशित दबी (चित्र–52) आलमपुर म्यूजियम में कुदावेल्ली से आयी थी। कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के संगम पर चालुक्कय काल का एक शिव मन्दिर संगमेश्वर की दीवाल के दक्षिण पूर्वी कोने पर एक आयताकार शाल है।[44] जो एक आयताकार मात्रिका के सह–मन्दिर का विस्तार हैं चालुक्यों के इन सह–मंदिर का अस्तित्व सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक नयी चीज थी। ऐसा प्रतीत होता है कि मातृ–देवी प्रतिमाएँ इन सह–मन्दिरों से लगी हुई थीं। सम्भवतः इन सह–मन्दिरों का निर्माण विशेष रूप से मातृ–देवी और सप्तमात्रिका मन्दिरों को स्थापित करने हेतु किया गया था। आठवीं शताब्दी ई0 में चालुक्य काल के बहुत से लिंग और नन्दी के चित्र चमकदार काले पत्थर पर उकेरे गये हैं। उदाहरण के लिए पट्टाडकल का विरूपाक्स मन्दिर इसमें मातृ–देवी की स्त्री शरीर को देवी के साथ एक प्रस्तर खण्ड पर उकेरा गया है, कमल रूपी सर की पंखुड़ियाँ बड़ी–बड़ी हैं उसके प्रत्येक हाथ में एक कमल की कली है

जो कमल रूपी सर के बगल में अंकित है, कुहनियाँ घुटनों के पीछे छुप जाती हैं। प्रतिमा अपनी पीठ पर लेटी हैं, इसलिए स्तन विशाल है, उत्तानपाद पैर पीछे की ओर नाभि और योनि का कटाव एक दूसरे से मिला हुआ है। प्रतिमाएँ बाजूबन्द कंगन और पायजेब बने हुए हैं, किन्तु नितम्बों के चारों ओर मेखला नहीं है और टाँगों के बीच में वस्त्र नहीं हैं। यह एक शक्तिशाली प्रतिमा है जिसे क्रामरिच ने ''शक्तिशाली स्त्री आकृति'', ''चमत्कारी मातृत्व शरीर'' कहा है। यह आकृति यदि कमल रूपी सर के नीचे की ओर देखी जाय तो कमल की कली की तरह का लिंग टाँगों के बीच दिखाई देता है, योनि का कटाव लिंग के कटाव जैसा दिखता है।

कुदावेल्ली की दूसरी प्रतिमा जो अब आलमपुर संग्रहालय में है (चित्र–55) चालुक्य काल की है, किन्तु इसकी विशेषता है कि यह पद्धति है। यह आलमपुर के निकट पंचलिंगला मन्दिर के बगल में रखी गयी एक अन्य प्रतिमा (चित्र–56) के समान है। वे कुदावेल्ली (चित्र–52) और दरसूराम (चित्र–54) उदाहरण जैसी है। किन्तु थोड़ा सा अन्तर है, जैसे कमलरूपी सर तीन चौथाई नहीं दिखता किन्तु पार्श्व से देखने पर ये प्रतिमाएँ वस्त्र पहने हैं, दोनों हाथों में कमल की कलियाँ हैं, किन्तु पंचलिंगला प्रतिमा में कलियाँ सर से बाहर की ओर झुकी हैं किन्तु कुदावेल्ली प्रतिमा में कलियाँ सर की ओर झुकी हैं। इन दोनों प्रतिमाओं के भारी स्तन और पतली कमर और आकृति की संवेदनहीन भावभंगिमा महत्वपूर्ण है जिसके कटाव और भाव स्पष्ट नहीं होते।

एल्लाला कुरनूल जिला, आन्ध्रा (चित्र–57) से प्राप्त एक प्रतिमा (कुदावेल्ली की प्रतिमा) (चित्र–55) और पंचलिंगला की प्रतिमा (चित्र–56) के समान है। इसमें मात्र इतना है कि इसका अंकन अधिक साफ सुथरा है। यह प्रतिमा हैदराबाद म्यूजियम में प्रदर्शित है। पंचलिंगला और कुदाबेल्ली प्रतिमाओं की तरह योनि छिद्र में एक त्रिभुज बनाया गया है,

जो या तो एक मेखला प्रदर्शित करता है या अधोवस्त्र जैसा की सरगुट्टा (चित्र–103) को पहने हुए दिखाया गया है। कुदावेल्ली मातृ–देवी में इस भाग का छिद्र मौलिक नहीं है, ये तीनों उदाहरण कुदाबेल्ली पंचलिंगला और एल्लाला सम्भवतः सातवीं शताब्दी ई0 के हैं तीनों ही तीन वर्ग फीट में है।

मातृ–देवी प्रारूप–3 की प्रतिमा मीयापुरम जिला महबूबनगर आन्ध्रा–प्रदेश (चित्र–64) से प्राप्त है, जिसे ब्रुनो–डजेन्स ने आन्ध्र–प्रदेश के श्री–शैलम क्षेत्र का सर्वे करते हुए प्रकाशित किया था।[45] इसे सत्यम्मा मन्दिर के बाहर पाया गया था। इस आकृति का कमल रूपी सर हल्का सा सामने की ओर झुका है और प्रत्येक हाथ कमल का फूल है, देवी एक कण्ठहार पहने है। यह प्रतिमा सम्भवतः सातवीं शताब्दी की है इस प्रतिमा की आन्ध्रा राज्य की अन्य चालुक्य प्रतिमाओं से तुलना की जा सकती है (जैसे 54–56 तक की आकृतियाँ) इस आकृति का स्थानीय नाम रेणुका है जो कि परशुराम कथा की लोकप्रियता का प्रमाण है।

राष्ट्रकूट काल की मातृ–देवी की बहुत सी प्रतिमाएँ यह प्रमाणित करती है कि चालुक्यों के पश्चात् जो राजवंश आया उसने इस देवी की उपासना जारी रखी इनमें सबसे महत्वपूर्ण 41 इंच की वर्गाकार प्रतिमा है, जो ऐहोल के गलागनाथ मन्दिर समूह से ज्ञात है जिसे अब ऐहोल संग्रहालय में रखा गया है। यह लाल बलुआ पत्थर की प्रतिमा है (चित्र–61) इसकी सतह टूट गयी है, प्रतिमा में कमल रूपी सर इस प्रकार है जैसे वह गले पर टिका है। इसे प्रारम्भिक चालुक्य काल की प्रतिमा नहीं माना जा सकता बल्कि यह आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ऐहोल पर राष्ट्रकूट आधिपत्य काल की कृति है यह मातृ–देवी प्रतिमा ऐहोल के राष्ट्रकूट शिव मन्दिर के सह–मन्दिर में थी और समानान्तर

एक और सह–मन्दिर है जिसमें एक प्रभावशाली मातृका का समूह था जो प्रारम्भिक चालुक्य परम्परा में सिद्धानकोला और आलमपुर के बाल मन्दिर में पाया गया है।[46]

एक और कमल रूपी सर वाली प्रारूप–3 मातृ–देवी की प्रतिमा नागेश्वर स्वामी मन्दिर प्रात्कोटा आन्ध्रा में पायी गयी जो कुदावेल्ली जाने वाली सड़क पर है और यह आठवीं से नवीं शताब्दी ईस्वी की राष्ट्रकूट प्रतिमा है। यह प्रतिमा चित्र–56) की पंचलिंगला मन्दिर के समान है, किन्तु इसका सर पिरामिड की तरह त्रिस्तरीय कमल पंखुड़ियों की तरह है जो प्रारम्भिक चालुक्य आकृति में नहीं है, उसने सर के बगल में कमल की पंखुड़ियाँ पकड़ रखी है, तेलगू में इस देवी को बेलान कालचेम्मा के नाम से जाना जाता है।[47]

गौरी शिव की शक्ति है शिव ही हर है, और गौरी को शिव की पत्नी माना गया है। देवी गौरी के विभिन्न नामों में, उमा, पार्वती, रम्भा, तोतला, त्रिपुरा और श्री स्वयं गौरी हैं।[48] सातवीं शताब्दी के मध्य तक गौरी शिव से सम्बद्ध हो गयी थी, और प्रारम्भिक चालुक्यों द्वारा पूजी जाने लगी थी। उड़ीसा शत्रुघ्नेश्वर मन्दिर में हर गौरी को कमल के रूप में दिखाया गया है (चित्र–108)।

660 ई0 में चालुक्य राजा वैष्णो से शैव हो गये, और अपने नाम के पहले प्रत्यय के रूप में आदित्य शब्द का प्रयोग करने लगे आदित्य अदिति के पुत्र है। पहले तो शैव राजा विक्रमादित्य और विनयादित्य के शासन के काल में सब मातृ–देवी की प्रतिमाओं वाले मन्दिर और शप्तमातृका वाले मन्दिर बने। मातृ–देवी की पूजा जो चालुक्यों द्वारा की गयी थी, उसका उदाहरण बेल्ली गाँव में केदारेश्वर मन्दिर (चित्र–61) के बगल में आज भी की जाती है। चालुक्य राजा विनयादित्य ने पुत्रहीन युगलों पर एक टैक्स भी लगाया था जिसका उल्लेख एक शिलालेख में मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि विनयादित्य को

अपने सैनिक अभियानों के लिए सैनिकों की आवश्यकता थी, इसीलिए इस देवी को विशेष मन्दिरों में स्थापित किया गया ताकि पुत्रहीन महिलाओं को पुत्र मिल सके।

चालुक्य काल के दो मन्दिर सिद्धनकोला और आलमपुर के पास सप्तमातृका सह मन्दिर के रक्षक के रूप में बकरी के सर वाले रक्षक है किन्तु उनकी पहचान समस्यामूलक है, ये बकरी के सर वाले नैगमेश स्कन्द के साथ हो सकते हैं क्योंकि स्कन्द का पालन पोषण मातृकाओं ने किया, ऐसा ही दृश्य ऐलोरा के (चित्र–21) मन्दिर में दिखायी देता है, ऐलिफैंटा के मन्दिर में दिखायी देता है और जोगेश्वरी में दिखायी देता है।

(चित्र–45–47) बकरी के सर वाली आकृति की सम्भावित पहचान दक्ष के रूप में की गयी है। दक्ष सम्पूर्ण जगत की माता अदिति के पिता हैं और ऋग्वेद के (X.72.2.4) अनुसार अदिति दक्ष की माता है। यह एक विरोधाभाष है यद्यपि दक्ष के मानस पुत्रों ने ही पृथ्वी को आच्छादित किया फिर भी दक्ष अपने मानस सृष्टिकर्ताओं से पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं हुए। इस कारण वे लैंगिक जनन की ओर मुड़ गये। इस निर्णय ने विवाह और पुत्रों को महत्वपूर्ण बना दिया। महाभारत के आदि पर्व के 74 वें श्लोक में इसका वर्णन है। दक्ष की एक अन्य पुत्री गौरी है जिसके लिए दक्ष ने रुद्र से प्रार्थना की कि वह अपने क्रोध को त्यागकर विवाह में गौरी का वरण करे।[49]

बकरी के सर वाले सन्तरी चाहे नागमेश हो या दक्ष दोनों ही जनन से जुड़े हैं। सह–मन्दिरों में सप्तमात्रिका चालुक्य राजाओं के पालनकर्ता, पोषणकर्ता के रूप में मानी गयी हैं एक ताम्र पत्र में चालुक्य राजा अपने को श्री का सप्तमातृकाओं द्वारा पोषित और दबी हरित के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं। 1956 में प्रकाशित स्टेला क्रामरिच के लेख में अदिति की पहचान मातृ–देवी के रूप में की गयी है।

प्रारूप–4 मनुष्योचित रूप

मातृ–देवी की चौथे प्रकार की प्रारूप–4 प्रतिमाएँ पूर्णतः मानवीय है, पहले, दूसरे और तीसरे (1, 2, 3) रूपों के विपरीत इनका सर स्त्री का है, पैर उत्तानपाद स्थिति में है, और भुजाएँ सर के दोनों ओर है (चित्र–65–78, 81–90) देवी का यह रूप गुजरात और राजस्थान में लोकप्रिय है। महाराष्ट्र में भी इसके दो उदाहरण मिलते हैं।

मातृ–देवी की प्रारूप–4 प्रतिमाएँ अधिकांशतः छठीं से सातवीं शताब्दी ई0 तक की मानी जाती है, किन्तु दो अपवाद है। पहली अमरेली गुजरात में जिसे पहली से तीसरी शताब्दी ई0 का माना जाता है (चित्र–65) किन्तु यदि ऐलिफैन्टा की मातृ–देवी से तुलना की जाय तो इसे छठीं शताब्दी ई0 का मान सकते हैं[50] और दूसरी क्राड़िंग्टन के अनुसार द्विपक्षीय मृदपट्टिका जिसमें एक ओर देखने पर मातृ–देवी की आकृति है और दूसरी ओर देखने पर एक मेढक की आकृति जैसी दिखती है। यह पट्टिका मथुरा से प्राप्त कुषाण काल की दूसरी शताब्दी ई0 की लगती है।[51] (चित्र–66–68 तक) जो विक्टोरिया और अल्बर्ट म्यूजियम में छतिग्रस्त आकृति प्रारूप–4 का अकेला उदाहरण है जिसे छठी से सातवीं शताब्दी ई0 का नहीं माना जा सकता। फिर भी पट्टिका क्षतिग्रस्त होने के कोरण इसके प्रारूप का अनुमान करना कठिन है, अतएव इसका काल निर्धारण अत्यन्त दुष्कर है। छठी से सातवीं शताब्दी ईस्वी में मानव सिर वाली प्रारूप–4 की मातृ–देवी जहाँ जहाँ उत्तर पश्चिम क्षेत्र में महत्वपूर्ण है वहीं मध्य और दक्षिण क्षेत्र में प्रारूप–2 और प्रारूप–3 की कमल रूपी सर वाली आकृतियाँ प्रचलित थी।

प्रारूप–4 की प्रतिमाएँ प्रायः समूह में है, मातृ–देवी की प्रारूप–4 सर वाली सभी प्रतिमाएँ पत्थर पर उकेरी गयी है, सिवाय मथुरा से प्राप्त द्विफलक मृदपट्टिका को छोड़कर प्रारूप–4 सर वाली पट्टिका या तो दो वर्ग इंच में है या लम्बी है, उदाहरण के लिए ऐलोरा गुफा के 21 वें मन्दिर की आकृति 50 इंच ऊँची और 77 इंच चौड़ी है। ऐलिफैन्टा की

प्रतिमा एक प्रस्तर पट्टिका पर है, जहाँ मानव सर देवी के दायी ओर उपासक है और दाहिने ओर एक बैल है, किन्तु यह चीजें अब अस्पष्ट है (चित्र–76) यस0 गोरक्षेकर ने इस आकृति को छठी शताब्दी का माना है।[52]

प्रारूप–4 का शानदार उदाहरण मथुरा म्यूजियम में सुरक्षित मध्य–भारत से प्राप्त मानव सर वाली आकृति (नं0 15.597) है, प्रारूप–4 का यह उदाहरण सम्भवतः आठवीं शताब्दी ईस्वी में प्रतिहार वंश द्वारा बनायी गयी है (चित्र–70)।[53] यह आकृति मध्यम कद की है, ऊँचाई 11 इंच चौड़ाई 5.5 इंच उसके दोनों हाथों में खिला हुआ कमल है, उसके दोनों घुटने फ्रेम से बाहर निकले हुए हैं, कान की बाली ऐलोरा की 21 वीं आकृति जैसी है, जिसमें बाली के भीतर कमल का फूल बना हुआ है (चित्र–75) उसके पैर पीछे की ओर मुड़े हुए हों, उसके सर बँधे हुए बाल जूड़े की तरह दिखायी देते हैं। उसके सर के चारों ओर एक प्रकाश पुन्ज है।

एक आकृति कवि नामक स्थान भडत्रोच जनपद, दक्षिणी गुजरात से खस्ताहाल स्थिति से प्राप्त हुई है। यह सतह से मिली है यह भूरे पत्थर के टुकड़े पर अंकित है। बनावट के आधार पर इसे छठीं शताब्दी ई0 का माना जाता है (चित्र–84।[54] यह एलीफैन्टा के मातृ–देवी के समकक्ष दिखाई देती है या अमरेली से प्राप्त अन्य आकृतियों से मिलती है, इसके दाहिने ओर एक स्त्री आकृति भी है और मातृ–देवी के बायीं ओर सम्भवतः एक बैल है।

दक्षिणी गुजरात अमरेली की मूर्ति काले पत्थर पर उकेरी गयी है, इसके हाथ में एक कमल का फूल है, उसने सर पर एक आवरण और एक कन्ठहार पहन रखा है।[55] अमरेली प्रतिमाओं को छठीं शताब्दी ई0 का माना जा सकता है।

गुजरात के बड़ोदा जिले के पावी–जेतपुर से प्राप्त मातृ–देवी की आकृति (चित्र–71) अन्य सभी प्राप्त आकृतियों से अलग है, इसमें देवी के हाथ खुले हैं, दाहिना हाथ टूटा है, चेहरा भी टूट गया है, लेकिन उसका सिर सत्प्राण तीन शिखरों वाला है। वी0एच0 सोनवाने ने इस आकृति को आठवीं से नवीं शताब्दी ई0 का मानते हैं और सोनवाने के अनुसार इस प्रतिमा की तीन शिखरों वाले मुकुट रूपी आभूषण तथा उसके निर्माण का तरीका अकोटा से प्राप्त प्रतिमाओं जैसा है, जो सातवीं आठवीं शताब्दी की है, किन्तु इस प्रतिमा का तरीका थोड़ा सा अलग है जो आठवीं नवीं शताब्दी ईस्वी से अलग करता है।[56] प्रारूप–4 के आकृतियों के अधिक शक्तिशाली होने के कारण जो इस क्षेत्र से पायी गयी है, छठी शताब्दी ई0 की मानी जाती है।

प्रारूप–4 की मानव सर वाली मातृ–देवी की आकृति आन्ध्र से नहीं पायी गयी है और कर्नाटक से भी नहीं मिली है (चित्र–72) सिवाय एक आकृति के जो शिव प्रतिमा के ऊपर छत में लगी हुई आकृतियों में से एक है जो एहोल के हच्चपयाया मन्दिर से प्राप्त है जो सातवीं शताब्दी ई0 का एक चालुक्य मन्दिर है, उसकी टाँगों की स्थिति और पैरों की स्थिति पीछे की ओर है।

प्रारूप–4 की मातृ–देवी प्रतिमाओं में अधिकतर पत्थरों की पट्टिकाओं पर समूह में उकेरी गयी हैं। दक्षिण में प्रसव के समय फैले हुए पैरों वाली मातृ–देवी की प्रारूप एक प्रतिमा तीसरी तथा चौथी शताब्दी ई0 में लोकप्रिय थी। प्रारूप–2 और प्रारूप–3 प्रतिमाएँ प्रारूप एक की उत्तराधिकारी है। प्रारूप–एक का उत्तानपाद–पात्र मानवीय योनि के रूप में स्त्री की उत्पादकता शक्ति को प्रदर्शित करता है।

मातृ–देवी की प्रारूप–2 प्रतिमा प्रारूप–1 प्रतिमा जैसी ही है, प्रारूप–2 की प्रतिमा में मात्र इतना अन्तर है धड़ में कन्धे और स्तन जुड़ गये हैं। प्रारूप–2 की प्रतिमा चौथी

से लेकर 9 वीं शताब्दी ई0 तक बनायी गयी हैं। भुजाहीन तथा स्तनों को अधिक महत्व प्रदान करने वाली यह प्रतिमा प्रदर्शित करती है कि प्रारूप–2 की मातृ–देवी प्रतिमाएँ मात्र पोषण की प्रतीक हैं।

हिन्दू देवी देवताओं के विपरीत प्रारूप–1 और प्रारूप–2 में मातृ–देवी की उत्पादक और सृजनात्मक शक्ति को भुजाओं में धारण की हुई वस्तुओं से प्रदर्शित करने के बजाय उसके शरीर के निश्चित बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट किया गया है, जैसे वक्षस्थल और योनि।

प्रारूप–3 मातृ–देवी की प्रतिमाओं में ऊपर की ओर उठी हुई दोनों भुजाओं में कमल की कली है, पैर उत्तानपाद स्थिति में है तथा सभी चित्र कमलवत सिर वाले हैं। ये प्रतिमाएँ चौथी से दसवीं शताब्दी ई0 तक बनायी गयी थीं।

मातृ–देवी की प्रारूप–4 की आकृति में नारी धड़ के साथ एक मानवीय सिर भी है, जिसमें ऊपर की ओर उठी हुई दोनों भुजाओं में कमल कली है तथा पैर उत्तानपाद रूप में है। प्रारूप–4 की प्रतिमा सबसे बाद की, चौथी से दसवीं शताब्दी ई0 के बीच बनायी गयी हैं।

हिन्दू देवियों की तरह प्रारूप–3 और प्रारूप–4 में जब देवी भुजायुक्त हैं, तो उन्होंने कमल की कली या फूल को धारण कर रखा है, यह उत्पादक और सृजनात्मक शक्ति को प्रदर्शित करने का उपयुक्त प्रतीक है।

दक्षिण भारत में चालुक्यों के अन्तर्गत मातृ–देंवी के पूजन को राजकीय संरक्षण प्राप्त था। प्रारम्भिक चालुक्य शासक विनयादित्य (681 से 96 ई0) के अभिलेख से ज्ञात होता है कि पुत्रहीन युगलों पर कर लगाया गया था।[57] ऐसा प्रतीत होता है कि विनयादित्य को अपने सैनिक अभियानों के लिए सैनिकों की आवश्यकता थी, इसीलिए मातृ–देवी को विशेष मन्दिरों में स्थापित किया ताकि पुत्रहीन महिलाओं को पुत्र मिल सके।

नोट्स

1. राय 1983, फीगर, 270, इरोनियसली आइडेन्टीफाइड ए सान्ति इक्जैम्पल ऐज बीइंग फ्राम यंल्लेसवरम। अदरवाइज सान्ति मातृ–देवी इक्सजैम्पल आर

प्रीवीयसली पब्लिस्ड। अदर फाइन्ड्स फ्राम सान्ति वेयर पब्लिस्ड बाइ शेशाद्रि, 1972, 160–70, एण्ड बाइ यम0यस0 नागराजा राव, प्रोग्रेस आफ आर्कियोलाजी इन कर्नाटका 1956–1972, मैसूर, 1978, 29, 35–36

2. द अर्ली चालुक्य स्टोन इमेजेज आर क्वाइट सीमीलर एण्ड टू मे दी कापीज आफ फ्रस्ट।

3. प्रावीजली अनपब्लिसेड।

4. केप्ट इन द आन्ध्र–प्रदेश स्टेट आफिस आफ आर्चेयोलाजी ऐण्ड मुसेम्स हैदराबाद नो आई–आई 9 अनपब्लिसेड।

5. धेरे 1978 फिगर 2. सन्कालिया 1960 फीगर 4. कैपेकर 1969. फीगर 27. नो 8. थीव्री 1985 फीगर 6. आइ डिड नाट फाइन्ड दिस इक्सेम्पल ऐट तेर आइ स्ट्रोन्गली सस्पेक्ट धेरेज लाइन ड्राविन्ग इयर्स इन नाट इनक्लाउडिंग लोट्स पेटल्स आन दी माउथ आफ दी पूर.

6. धेरे 1978 फीगर 4. सन्कालिया 1960 फीगर टू रें 1983 फीगर 269.

7. नरसिम्हास्वामी 1952. 137–39 धेरे 1978. फीगर 9. रिपब्लिशेड द प्रेकानसर्वेसन फोटो फार इट्स पोक्लकोनसर्विसन स्टेट सी देवकरन 1981. पी एल 112. सर्मा 1982 पी एल 65. आर तिवारी 1985. फीगर 2.

8. ग्रोव 1971, 288, स्लेस, फार ऐन इक्सेम्पल आफ डबलमेनिंग पोर्टी सी धनमेजय डिविजनधनकवया ऐन एथसेन्टरी साइमूलटेनेज रेन्डरिंग आफ द महाभारत ऐण्ड द रामायन.

9. इग्नोर 1978–140.

10. कर्मरिच 1981, 162–78 फार ऐन इक्सप्लेनेशन आफ द लिन्गा,

11. तेर मुसेम आर सी 7.219 टेरा–कोटा 2 1/4 इन्चेज स्क्योर आर सी 7.220 टेरा कोटा 2. 1/2 इन्चेज स्क्योर भीटा इक्जाम्पल एलाहाबाद म्यूजियम नो 299, एस0सी0 केला 1957, नाट इललुस्ट्रेटेड स्टोन 5 7/10 वॉय 5 1/2 इन्चेज.

12. नाउ केप्ट इन द श्री भवानी म्यूजियम इन द लाइब्रेरी आन्ध्र सतरा डिस्ट्रीक्ट महाराष्ट्रा 3 बाय 4 इन्चेज स्टोन पब्लिशेड धेरे 1978 फीगर 13, सन्कालिया 60 फीगर 8 तिवारी 1985 फीगर 9,

13. नो 3.80 प्राविजली अनपब्लिशेड,

14. एस0सी0 काला 1980. 66 नो इलक्ट्रेसन।

15. मुखोपाध्याय 1972 पी0एल0 8 हाइट 5 अन्चेज विथ 4. 1/2 इन्चेज,

16. डू 1974 पी0एल0 39 नो 4 द मोर इनटेक्ट इक्जाम्पल नाउ केप्ट ऐट नागपुर यूनिवर्सिटी वाज ए स्ट्रेटफेड फाइन्ड ऐण्ड मेसर्स 2. 1/4 बाइ 2. 1/2 इंच

17. इण्डियन म्यूजियम ए आई 2688 पब्लिस्ड बाइ मुखोपाध्याय 1972, 76–77 प्लेट 8 ऐण्ड इलाहाबाद म्यूजियम 3904 टेरा कोटा. पब्लिस्ड बाइ काला 1980, 66, नो इलूस्ट्रेसन।

18. सी0 गुप्ता, 1987, 4.5 इंचेज स्क्वायर एण्ड 4 1/4 बाइ 3 इंचेज, बोथ स्टोन।

19. तेर म्युजियम 9.148, स्टोन फ्रेगमेन्ट, 2 1/4 इंचेज स्क्वायर, अनपब्लिस्ड।

20. देव, 1974, पीयल। 39।

21. जामखेदकर, 1985, 18, मेन्सन्स इट, रेड सैन्डस्टोन।

22. पाउनर पब्लिस्ड बाइ सी0 गुप्ता, 1987, 48।

23. धरं, 1978, फीगर 7; देव, 1973, पीयल। 2, 3; हंटर, 1933, 30–35; तिवारी, 1985, फिगर–12।

24. मिश्रा, 1985।

25. प्राइवेट कलेक्शन, नागपुर, सी0 गुप्ता, 1987, फिगर 1, 47; द पौनार मातृ–देवी सर्पोट्स क्रामरिच आइडियाज दैट द सॉची लोटीफार्म लेडी इज रीलेटेड टू द आलमपुर फिगर; क्रामरिच, 1956, 260।

26. अनपब्लिस्ड। केप्ट इन द आन्ध्र–प्रदेश डीपार्टमेन्ट आफ आर्कियोलाजी एण्ड म्युजियम आफिस नं0 31, 2 इंचेज× 1 3/4 इंचेज।

27. भीटा, इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट, यू0पी0 पब्लिस्ड : मार्शल, आर्कियोलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट 1927–28; ए आई यस ए आर; 1911–12, पी यल0 23, नं0 40, 75, कुषान–गुप्ता डेटिंगः मार्शल, ए यस आई ए आर 1927–28, 6; धावलीकार, 1977, पी यल0 56, 58, रीजन्स फार हिज सी0 फर्स्ट टू सेकेण्ड सेन्चुरी डेटिंग गिवेन; बनर्जी, 1974, 168; सांकालिया, 1960, पी यल0 5, 114, साइट्स मार्शल कुषान–गुप्ता डेटिंग बट प्रफर्स कुषान बीकाज द पीस वाज फाउण्ड विथ ए रेड पॉलिस्ड वेयर वेसल आफ सेकेण्ड–सेन्चूरी टाइप एण्ड बीकाज द मातृ–देवी बीयर्स ए कांसेक्युटिव नम्बर इन मार्शल्स रीपोर्ट। आल सबसीक्युएण्ट आथर्स रीपीट सांकालियाज डेटिंग सी0सी0 दास गुप्ता, 1961, फिगर 106, 300; तिवारी, 1985, फिगर 1, 270।

28. शेरे, 1961; ची0 यल0 गुप्ता, 1965, पी0यल0 यल, 307, इन्ट्री 145, तिवारी, 1985, फिगर 10, 280। अगेन नो रीजन्स आर प्रोवाइडेड फार द कुषान डेटिंग।

29. छिक्षित, 1957, पी यल0 यक्स वीआईए, 30। इन द म्युजियम इट इज मिसआइडेन्टीफाइड ऐज उषाज आर सूर्या।

30. हार्ले, 1986, फीगर 24, 39–40; गाजा लक्ष्मी फ्राम कौशाम्बी; 52।

31. नरसिम्हास्वामी, 1952, 137–39।

32. के0 वी0 सुन्दरा राजन, ''आन्ध्र इक्ष्वाकु क्रोनोलाजी एण्ड इट्स सिग्नीफीकेन्स फार अरली हिस्ट्री आफ गुजरात,'' जर्नल आफ द गुजरात रिसर्च सोसाइटी 25, 1963, 285–94; सरकार इन आसेर, 1985, 29।

33. नरसिम्हास्वामी, 1952, 138; कुमारस्वामी, 1971, 61, डीसकस द रीलेसन आफ द गाडेज एण्ड द कुम्भा।

34. दीज मे बी अरलायस्ट सरवाइविंग इंसटान्सेस आफ द एडिसन आफ सबस्राइन टू द टेम्पुल कम्पाउण्ड इन द साउथ इण्डिया।

35. चापगार्स इनऐक्यूरेट डायरी स्केच, ओमिटींग द लोटस हेड; वाज रीप्रोडयूस बाइ सांकालिया, 1960, फिगर 6, 114; एण्ड धेर, 1978, फिगर 6; फोटो पबिलस्ड बाइ दिवाकरन, 1981, 59, पी यल0 113।

36. सुन्दरा राजन, 1981, 114, रीपोर्ट द सेम।

37. रेडक्लिफे, 1981, 191, एण्ड रेफरेन्सेस देयरइन।

38. फार द माइभ आफ रेनूका सी रमेसन, 1969, 35–38, आर गोपीनाथ राव, 1968, वालूम 1, पीटी 1, 184–85, साइटेड फ्राम महाभ्राता, 3 115।

39. राडक्लीफे, 1981, 296; हार्ले, 1969, 53–83, फार फार डेसक्रिप्सन आफ द टेम्पल।

40. डेस्पाइट द 200 माइल्स सेपरेटिंग द साइट्स, इट इज पासिबल दैट द वन वर्कशाप आफ द आर्टिस्ट वाज रिसपांसबल फार प्रोड्युसिंग इमैजेज इनस्राइंड एट आलमपुर एण्ड इन द बादामी एरीया। ऐट आलमपुर देयर आर ए फयूमात्रिका इमेजेज हिवच डूप्लीकेट सम आफ द बाला ब्रह्मा सेट।

41. वोनली द थाइ, लेफ्ट आर्म, एण्ड ए बिट आफ द लोट्स हेड आफ द चिक्कामहाकुटा इमेजसरवाइव; फिगर–51;। द बैंक स्लैब मीजर्स 39.5 इंचेज इन हाइट। हवाट रीमेंस एज फार एज साइज एण्ड डीटेल्स इज आइडेन्टीकल टू द नागनाथ महाकुटा इमेजेज। द प्रींसेस आफ दिस फ्रगमेन्ट एट चिक्कामहाकुटा मे कनफर्म ए थीयरी आफ धेर, 1978, 1–21, अबाउट द ओल्ड महाकुटा बीइंग द सेम एज नंदीकेशवारा एण्ड ओरिजनली लांगेस्वरा।

42. द डेट्सइज डीबेटेड। सी बोलोन, 1985, 153–60।

43. फ्लीट, 1981, 103, पब्लिस्ड बाइ क्रामरिच, 1956, फीगर 3, एण्ड धेर, 1978, फीगर 5।

44. डैगन्स, 1984, फीगर 271–30।

45. बालोन, 1986।

46. डैगन्स, 1984, फीगर 721, 545; फार फीगर इलूस्ट्रेसन सी सिवराममूर्ति, 1982, फीगर 51।

47. इण्डियन एन्टीक्यूरी 2, 1878, 241–51।

48. स्टटले एण्ड स्टटले, 1977 96; बनर्जी, 1974, 502।

49. गोपीनाथ राव, 1968, वाल. 2, पीटी. 1, 185, फ्राम बराहपुराण।

50. आमरेली; मार्गबन्धु, 1975–76, 208, फीगर 3, 2 इंचेज स्क्वायर, स्टोन; मेंसन बाइ सोनवाने, 1986।

51. काड्रिंग्टन, 1935, 65–66।

52. गोरकशेकर, 1982, 2–3; सी फार्म 4 मल्टिफीगर्स रीप्रेजेन्टेशन्स।

53. काड्रिंग्टन, 1926, पीयल 21 सी।

54. मार्गबन्धु, 1976, 208, फीगर 2, नाउ इन द कलेक्सन आफ यू0पी0 शाह।

55. मार्गबन्धु, 1976, 28, फीगर 3; यस0 आर0 राव, 1966।

56. सोनवाने, 1986।

57. इण्डियन एक्टीक्यूटी 2, 1878, 241–51।